राखी के लिए स्लोगन

1. आप निश्चय और फलक से कहते हो ''मेरा बाबा`` इसलिए माया आपके समीप आ नहीं सकती।
2. आप बाप के प्यार के पीछे व्यर्थ संकल्पों को भी न्योछावर करने वाली समर्पित आत्मा हो।
3. आप ज्ञानी तू आत्मा हैं इसलिए गुणों वा विशेषताओं का अभिमान आ नहीं सकता।
4. पवित्रता ही आपके जीवन की नवीनता है, यही ज्ञान का फाउण्डेशन है।
5. आपने दृष्टि-वृत्ति में भी पवित्रता को अण्डरलाइन किया है क्योंकि स्मृति में है कि अब घर जाना है।
6. आप पवित्रता की शक्ति से अपने संकल्पों को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप बनाकर कमजोरियों को समाप्त करने वाली शक्तिशाली आत्मा हो।
7. आप समस्या स्वरूप नहीं लेकिन समाधान स्वरूप बनने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।
8. आप सेवा के उमंग–उत्साह में रहते हो, यही माया से सेफ्टी का साधन है।
9. आपके पुरुषार्थ में सच्चाई है इसलिए बापदादा की एकस्ट्रा मदद का अनुभव होता है।
10. आपने गम्भीरता के गुण को धारण किया है इसलिए जमा का खाता भरपूर है।
11. आप अमृतवेले दिल में परमात्म स्नेह को समा लेते हो इसलिए और कोई स्नेह आकर्षित नहीं कर सकता।
12. आपके दिल में परमात्म प्यार वा शक्तियां समाई हुई हैं इसलिए मन में उलझन आ नहीं सकती।
13. आप प्रकृति को भी पावन बनाने वाले सम्पूर्ण लगाव मुक्त आत्मा हैं।
14. आप क्रोध मुक्त हो क्योंकि निःस्वार्थ सेवा करते हो।
15. आपने पवित्रता का पिल्लर मजबूत किया है, यह पिल्लर लाइट हाउस का काम करता रहेगा।
16. आप अपनी सूक्ष्म कमजोरियों का चिंतन करके उन्हें मिटाने वाली स्वचिंतक आत्मा हो।
17. आप अपने धारणा स्वरूप से योगी जीवन का प्रभाव डालने वाली अनुभवी आत्मा हो।
18. आप सच्ची सेवा द्वारा खुशी और सर्व की दुआओं का अनुभव करते रहते हो।
19. आपकी नम्बरवन सेवा है - अपने चलन और चेहरे से बाप का साक्षात्कार कराना।
20. आप निमित्त आत्मा जिम्मेवारी सम्भालते भी सदा हल्के हो।
21. निश्चय ही आपके इस ब्राह्मण जीवन की सम्पन्नता का फाउण्डेशन है।
22. आप यथार्थ निश्चयबुद्धि हैं इसलिए सदा विजयी हैं।
23. आपने सर्वशक्तिमान् बाप को अपना साथी बनाया है इसलिए पश्चाताप हो नहीं सकता।
24. आप सदा क्लीन और क्लीयर रहने वाले योगी तू आत्मा हैं।
25. आप हर कर्म करते डबल लाइट रहने वाली धारणामूर्त आत्मा हैं।
26. आप निमित्त और निर्माणचित्त हैं . यही सच्चे सेवाधारी का लक्षण है।
27. आप झमेलों में फंसने के बजाए सदा मिलन मेले में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।
28. आप सदा उड़ती कला में उड़ते झमेलों के पहाड़ को भी क्रास करने वाली आत्मा हैं।
29. आप ब्राह्मण संसार में सर्व का सम्मान प्राप्त करने वाली तख्तनशीन आत्मा हैं।
30. जैसा समय वैसा अपने को मोल्ड कर लेने वाले आप रीयल गोल्ड हैं।
31. आप खुशी के खजाने से सम्पन्न हो इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या हो।
32. आप फरिश्ता बनने वाली आत्मा व्यर्थ बोल वा डिस्टर्ब करने वाले बोल से मुक्त हो।
33. आपके वचन हर आत्मा को कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले सत वचन हैं।

34. आप एक दो को देखने के बजाए स्वयं को देखने और परिवर्तन करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।
35. आपका बोल और चाल.चलन प्रभावशाली है इसलिए सेवा में सफलता मिलती है।
36. आप बिगड़े हुए को सुधारने वाली श्रेष्ठ सेवाधारी आत्मा हो।
37. आप साक्षी होकर हर खेल देखने के अभ्यासी हो इसलिए सेफ हो।
37. आपमें परखने की शक्ति है इसलिए फौरन परखकर फैंसला करने से सफलता होती है।
38. आपमें स्नेह, शक्ति और ईश्वरीय आकर्षण है इसलिए सब आपके सहयोगी बनते हैं।
39. आपको सर्व प्राप्तियां हैं इसलिए सदा प्रसन्नचित हो।
40. आपके पास एकाग्रता की शक्ति है इसलिए मन–बुद्धि भटकती नहीं।
41. आप दृढ़ता की शक्ति से मन को कन्ट्रोल करने वाली योगी तू आत्मा हैं।
42. आपके ब्राह्मण जीवन की विशेषता प्रसन्नता है, प्रसन्नता अर्थात् आत्मिक मुस्कराहट।
43. अनेकता में एकता लाना, बिगड़ी को बनाना..यही आपकी सबसे बड़ी विशेषता है।
44. आप फरिश्ता रूप में रहने के अभ्यासी हो इसलिए कोई भी विघ्न अपना प्रभाव डाल नहीं सकता।
45. आप चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप में रहते हो—यही ब्रह्मा बाप के दिलपसन्द गिफ्ट है।
46. आपका निश्चय दृढ़ है इसलिए विजय टल नहीं सकती।
47. आपके पास अलबेलेपन की लहर आ नहीं सकती क्योंकि आप बेहद के वैरागी हैं।
48. आपने बाप को अपना साथी बनाया है इसलिए सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न हो।
49. आपका सोचना और कहना समान है इसलिए हर कार्य में सफलता मिलती है।
50. आपने मन रूपी मन्त्री को अपना सहयोगी बनाया है इसलिए आप स्वराज्य अधिकारी आत्मा हो।
52. आप स्वराज्य के मालिक, सम्पूर्ण वर्से के अधिकारी हो।
53. आप जिम्मेवारी उठाने वाली आत्मा हो इसलिए एकस्ट्रा दुआओं का अधिकार प्राप्त है।
54. आपका स्नेह सेवा अर्थ है, स्वार्थ से नहीं इसलिए नष्टोमोहा हो।
55. आप परिस्थितियों में घबराने के बजाए उनसे पाठ सीखकर आगे बढ़ने वाली शक्तिशाली आत्मा हो।
56. आपके पास शुभचिंतन की शक्ति है जिससे नगेटिव भी पाजिटिव में बदल जाता है।
57. आप किसी भी प्रकार की हलचल में दिलशिकस्त होने के बजाए बड़ी दिल वाले हो।
58. आपके पास निर्णय करने की शक्ति है इसलिए मन में उलझन आ नहीं सकती।
59. आप बाप को जानकर दिल से बाबा कहते हो, यही सबसे बड़ी विशेषता है।
60. आपने अपनी स्वस्थिति शक्तिशाली बनाई है इसलिए परिस्थिति आपके आगे कुछ भी नहीं है।
61. आप त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट होकर हर कर्म करते हो इसलिए माया दूर से ही भाग जाती है।
62. आप पहले सोचते हो फिर करते हो..यही ज्ञानी तू आत्मा का गुण है।
63. आपने समय और संकल्प के खजाने की बचत की है इसलिए जमा का खाता भरपूर है।
64. आपको सदा करावनहार बाप की स्मृति है इसलिए मैं पन आ नहीं सकता।
65. आप दिल और दिमाग दोनों के बैलेन्स से सेवा करते हो इसलिए सफलता मिलती है।
66. आप शुभ भावना, शुभ कामना के श्रेष्ठ संकल्प से सम्पन्न हो इसलिए मन्सा शक्तिशाली है।
67. आपने सर्वशक्तिमान् को साथी बनाया है इसलिए सफलता आपके चरणों में आ जायेगी।
68. आप बाप के साथ को यूज़ करते हो इसलिए कभी दिलशिकस्त नहीं हो सकते।
69. आपके पास सम्पूर्ण सत्यता की जो शक्ति है . यही पवित्रता का आधार है।

70. आप सत्यवादी आत्मा हो इसलिए आपके चेहरे और चलन में दिव्यता है।
71. आपको अपने सत्य स्वरूप की स्मृति है इसलिए सत्यता की शक्ति से सम्पन्न हो।
72. आपके बोल वा कर्म में जो दिव्यता है . यही सत्यता की परख है।
73. आपमें सहनशीलता का ऐसा गुण है जिसमें सत्यता की शक्ति दिखाई देती है।
74. आप सत्यता की स्व-स्थिति से परिस्थितियों को सहज पार करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।
75. आपका मन–वचन और कर्म दिव्य गुणों के आधार पर है – यही दिव्यता है।
76. आप साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को और अशरीरी बनने में निराकार बाप को फालो करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।
77. आप कर्म के समय योग का बैलेन्स ठीक रखने वाली कर्मयोगी आत्मा हैं।
78. आपको कर्म करते करन-करावनहार बाप की स्मृति है इसलिए स्व–पुरुषार्थ और योग का बैलेन्स ठीक है।
79. आपको सदा स्मृति रहती है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ, इसलिए सर्व शक्तियां समय पर साथ देती हैं।
80. आपने सेवा और स्व पुरूषार्थ का बैलेन्स रखा है, यही मायाजीत बनने की सहज विधि है।
81. स्व पुरुषार्थ और सेवा के बैलेन्स से बंधन को संबंध में बदलने वाली आप ज्ञानी तू आत्मा हैं।
82. आप स्वयं को निमित्त करनहार समझकर चलते हो इसलिए कभी थकावट नहीं हो सकती।
83. आपमें जो रहम की भावना है, यह सहज ही निमित्त भाव इमर्ज कर देती है।
84. आप सच्चे रहमदिल हैं, इसलिए देह वा देह–अभिमान की आकर्षण नहीं हो सकती।
85. आपमें निःस्वार्थ और लगावमुक्त रहम है..इसलिए बुद्धि किसी में फँस नहीं सकती।
86. आप अच्छाई को धारण करते हो लेकिन अच्छाई में प्रभावित नहीं होते, यही आपकी विशेषता है।
87. आप सदा न्यारे और बाप के प्यारे रहते हो - यही सेफ रहने का साधन है।
88. आपकी शुभ भावनायें और सहयोग की बूंद से बड़ा कार्य भी सहज हो जाता है।
89. आप रहमदिल बन सेवा द्वारा निराश और थकी हुई आत्माओं को सहारा देने वाली आत्मा हो।
90. आप सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न हो इसलिए प्रसन्नचित हो, सब प्रश्नों से मुक्त हो।
91. आप सफलता को परमात्म बर्थराइट समझकर चलते हो इसलिए सदा प्रसन्नचित रहते हो।
92. आप निश्चय और जन्म सिद्ध अधिकार की शान में रहते हो इसलिए परेशान नहीं हो सकते।
93. आप नालेजफुल आत्मा व्यर्थ प्रश्नों को स्वाहा कर समय को सफल करने वाली हो।
94. आपके जीवन का श्वास खुशी है, आप खुशी में रहने और खुशी का दान देने वाली आत्मा हो।
95. आपमें सेवा का उमंग–उत्साह भी है तो बेहद की वैराग्य वृत्ति भी है -यही सफलता का आधार है।
96. आप साधनों को कमल पुष्प बनकर यूज़ करते हो इसलिए कर्मयोगी हो।
97. आप साधनों को यूज़ करते उनके प्रभाव से न्यारे और बाप के प्यारे हो।
98. आपने वैराग्य की ऐसी योग्य धरनी बनाई है जिसमें जो भी फल डालेंगे वह फलीभूत अवश्य होगा।
99. आपने बेहद के वैराग्य वृत्ति का फाउण्डेशन मजबूत किया है इसलिए सेकण्ड में अशरीरी बनना सहज है।
100. आप विल पावर वाली आत्मा हो क्योंकि आपका सोचना और करना समान है।
101. आप मैं के बजाए बाबा–बाबा कहते हर कार्य करते हो यही याद का प्रूफ है।

102. आप अपने अच्छे वायब्रेशन से निगेटिव सीन को पॉजिटिव में बदल देने वाली शक्तिशाली आत्मा हो।
103. आपके पास जो भी शक्तियां हैं उन्हें समय पर यूज़ करते हो इसलिए बहुत अच्छे - अच्छे अनुभव होते हैं।
104. आप हर गुण, हर शक्ति का अनुभव करने वाली अनुभवी मूर्त आत्मा हो।
105. आप अनुभवी आत्मा कभी वायुमण्डल वा संग के रंग में नहीं आ सकती।
106. आपने हिम्मत का कदम आगे बढ़ाया है तो बाप की सम्पूर्ण मदद मिलती रहेगी।
107. आप वाणी द्वारा सबको सुख और शान्ति देने वाली गायन योग्य आत्मा हो।
108. सदा मुस्कराते रहना यही आपकी विशेषता है, यही सन्तुष्टता की निशानी है।
109. आप अपने स्व पुरुषार्थ के वायब्रेशन से दूसरों की माया को सहज भगाने वाली आत्मा हो।
110. आपने अपनी नज़रों में बाप को समाया हुआ है इसलिए माया की नज़र लग नहीं सकती।
111. आप ऐसे खुशनुमः हो जो मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई देती है।
112. आप अपनी साधना द्वारा हाय–हाय को वाह-वाह में परिवर्तन करने वाली आत्मा हो।
113. आपके चेहरे और चलन से खुशनसीबी का अनुभव होता है।
114. आप खुशी के खजाने से सम्पन्न और खुशी की खुराक से तन्दुरूस्त आत्मा हो।
115. आप साक्षीपन की सीट पर रहते हो इसलिए सदा खुशी की अनुभूति होती है।
116. बापदादा आपके साथ-साथ है इसलिए माया का प्रभाव पड़ नहीं सकता।
117. आप साक्षीपन के तख्त नशीन हो इसलिए समस्यायें तख्त के नीचे रह जाती हैं।
118. आप विघ्न-विनाशक आत्मा हो क्योंकि आपकी बुद्धि में है कि विघ्नों का काम है आना और हमारा काम है विघ्न-विनाशक बनना।
119. आप ज्ञानी योगी तू आत्मा समय प्रमाण शक्तियों को यूज़ करने वाली हो।
120. आप अपने किये हुए संकल्पों पर दृढ़ता का ठप्पा लगाने के कारण विजयी बन जाते हो।
121. आप मुहब्बत के झूले में बैठ मौज का अनुभव करते हो इसलिए मेहनत नहीं लगती।
122. आप अचल स्थिति के आसन पर बैठने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।
123. आपने हर गुण और ज्ञान की बातों को अपने जीवन का निज़ी संस्कार बनाया है इसलिए पुराने संस्कार इमर्ज नहीं हो सकते।
124. आप ज्ञान रत्नों से, गुणों और शक्तियों से खेलने वाली रॉयल आत्मा हो, मिट्टी से नहीं खेल सकती।
125. आप बड़े बाप के बच्चे हो इसलिए न तो छोटी दिल करते और न छोटी बातों में घबराते हो।
126. आप ज्ञान और योग से कमाल करने वाले हो, बातों की परवाह करने वाले नहीं।
127. आपके हाथ में श्रेष्ठ भाग्य की रेखा खींचने का कलम है – श्रेष्ठ कर्म।
128. आपने श्रेष्ठ भाग्य की रेखाओं को इमर्ज किया है इसलिए पुराने संस्कारों की रेखायें मर्ज हो गई हैं।
129. आप सर्व शक्तियों वा ज्ञान के खजानों से सम्पन्न हो — यही संगमयुग की प्रालब्ध है।
130. आप रहमदिल बन सर्व गुणों और शक्तियों का दान देने वाले मास्टर दाता हो।
131. आप मनोबल से सेवा करते हो इसलिए आपको इसकी कई गुणा ज्यादा प्रालब्ध मिलेगी।
132. आप बेहद में रहते हो इसलिए हद की बातें स्वतः समाप्त हो जाती हैं।
133. आपके चलन और चेहरे पर जो प्रसन्नता की झलक है, यही रूहानी पर्सनैल्टी की निशानी है।
134. आप सदा प्रसन्न रहने और सर्व को प्रसन्न करने वाली दुआओं की पात्र आत्मा हो।

135. आपका कर्तव्य है - असमर्थ आत्माओं को समर्थी दे उनकी दुआयें लेना।
136. आप विश्व को सकाश देने की सेवा करने वाले विश्व सेवाधारी हैं।
137. आपने अपनी नजरों में बापदादा को समाया है इसलिए नज़र से निहाल करने की सेवा होती रहेगी।
138. आप दूसरों को सहयोग देकर स्वयं के खाते जमा करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।
139. आपके पास साइलेन्स की शक्ति इमर्ज रूप में है इसलिए सेवा की गति फास्ट हो जायेगी।
140. आप दिल से सेवा करते हो इसलिए सर्व की दुआओं की पात्र आत्मा हो।
141. आप परमात्म प्यार में लवलीन रहते हो इसलिए माया की आकर्षण अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती।
142. आप परमात्म प्यार के सुखदाई झूले में झूलने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो इसलिए दुःख की लहर आ नहीं सकती।
143. आपका ज्वालामुखी तीसरा नेत्र खुला हुआ है इसलिए आपके सामने माया शक्तिहीन है।
144. आप परमात्म अवार्ड लेने की पात्र आत्मा हो क्योंकि ध्यान है कि मुझे व्यर्थ और निगेटिव को अवाइड करना है।
145. आप सदा उत्साह में रहकर दूसरों को उत्साह दिलाने वाली महान आत्मा हैं।
146. आपके संकल्प रूपी पांव मजबूत हैं इसलिए काले बादलों जैसी बातें भी परिवर्तन हो जाती हैं।
147. आप समस्या स्वरूप नहीं लेकिन समाधान स्वरूप बनने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।
148. आप परेशान आत्माओं को अपनी श्रेष्ठ शान में स्थित करने वाले सच्चे सेवाधारी हैं।
149. आप बाप समान बिगड़ी को बनाने की सेवा पर हैं, यही नम्बरवन सेवा है।
150. आप अपने सर्व खजाने सच्ची दिल से सफल करने वाली भाग्यवान आत्मा हैं।
151. आप परमात्म स्नेह में समाये रहते हो इसलिए मेहनत से मुक्त हो।
152. आप स्नेह की छत्रछाया के अन्दर रहते हो इसलिए माया आ नहीं सकती।
153. कोई भी कार्य आप डबल लाइट बनकर करते हैं इसलिए मनोरंजन का अनुभव होता है।
154. आप में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज रहती है यही विश्व को सकाश देने की सेवा करने का साधन है।
155. आपको सर्व प्राप्तियां होते भी वृत्ति उपराम है - यही वैराग्य वृत्ति की निशानी है।
156. आप बेफिक्र बादशाह की स्थिति में रहते हो क्योंकि स्मृति में है कि ड्रामा में सब अच्छा ही होना है।
157. आप हर प्रकार की सेवाओं का चांस लेकर दुआओं से अपनी झोली भरने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।
158. आप सुख स्वरूप बनकर सुख देने की सेवा करते हो इससे पुरुषार्थ में दुआयें एड होती जाती हैं।
159. आप दुआयें लेते और सर्व को दुआयें देते हो इसलिए सहज मायाजीत बन जायेंगे।
160. आप पवित्रता की शक्ति से अपने संकल्पों को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप बनाकर कमजोरियों को समाप्त करने वाली शक्तिशाली आत्मा हो।
161. आपके इस ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर है गुण स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनना।
162. आपका एक–एक बोल युक्तियुक्त है क्योंकि मधुर और शुभ भावना सम्पन्न है।
163. आप किसी के प्रभाव में प्रभावित होने वाले नहीं, ज्ञान का प्रभाव डालने वाले हो।
164. आप ट्रस्टी होकर रहते हो क्योंकि आपमें सेवा की शुद्ध भावना है।
165. आप स्व परिवर्तन करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं इसलिए विजय माला गले में पड़ी हुई है।
166. आपने अपनी मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्नों का पर्दा हटाया हुआ है इसलिए अन्दर कल्याण का

दृश्य दिखाई देता है।

167. आप अन्तर्मुखी आत्मा हैं, जो व्यर्थ संकल्पों से भी मन का मौन रखती हैं।

168. आप एकान्तवासी बनने के साथ-साथ एकनामी और एकानामी वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।

169. आप सच्ची दिल से निःस्वार्थ सेवा में आगे बढ़ते हो इसलिए पुण्य का खाता जमा है।

170. बाप से, सेवा से और परिवार से आपकी मुहब्बत है इसलिए मेहनत से छूटे हुए हो।

171. आप सन्तुष्ट रहने और सर्व को सन्तुष्ट करने वाली आत्मा हैं इसलिए दुआओं का खाता जमा है।

172. आपको कोई अच्छा दे या बुरा लेकिन आपका लक्ष्य है सबको स्नेह देना, सहयोग देना, रहम करना।

173. आप अपने व्यस्त मन–बुद्धि को सेकण्ड में स्टॉप करने के अभ्यासी होने के कारण सहज योगी हो।

174. आपके पॉजिटिव संकल्प और शक्तिशाली वृत्ति ही इस वायुमण्डल को परिवर्तन करने का आधार हैं।

175. आप मेरे को तेरे में परिवर्तन कर भाग्य का अधिकार लेने वाली भाग्यवान आत्मा हैं।

176. आप एक परमात्मा के प्यारे बने हो इसलिए विश्व की आत्माओं का प्यार मिलता रहेगा।

177. मन और बुद्धि आपके कन्ट्रोल में हैं इसलिए अशरीरी बनना सहज है।

178. विश्व की आत्माओं को सकाश देने के लिए आपके पास अविनाशी सुख, शान्ति वा सच्चे प्यार का स्टॉक जमा है।

179. आप सर्व खजानों को सेवा में लगाकर अपने खातों को भरपूर करने वाली आत्मा हैं।

180. आप बाप के साथ रहकर हर कर्म करते हो इसलिए डबल लाइट हो।

181. आप सदा इसी अलौकिक नशे मे रहते ''वाह रे मैं`` इसलिए मन और तन से नेचुरल डांस करते हो।

182. आप मुरलीधर की मुरली पर देह की भी सुध-बुध भूलने वाली, खुशी के झूले में झूलने वाली सच्ची-सच्ची गोपी हो।

183. आप शिव बाप के साथ कम्बाइन्ड रहने वाली शिवशक्ति हो। आपका श्रृंगार हैं ज्ञान के अस्त्र–शस्त्र।

184. आप सदा बापदादा और परिवार के समीप हो इसलिए आपके चेहरे पर सन्तुष्टता, रुहानियत और प्रसन्नता की मुस्कराहट है।

185. श्रीमत का हाथ सदा आपके साथ है इसलिए सारा ही युग हाथ में हाथ देकर चलते रहेंगे।

186. आप अपने समय को, सुखों को, प्राप्ति की इच्छा को सर्व के प्रति माहादानी बनने वाली महान आत्मा हो।

187. आप सर्व खजानों से सम्पन्न सदा भरपूरता के नशे में रहने वाली आत्मा हो।

188. आप याद द्वारा सर्व शक्तियों का खजाना अनुभव करने वाली शक्तिशाली आत्मा हो।

189. आप आत्मा सर्व की दुआओं के खजानों से भरपूर वा सम्पन्न हो इसलिए पुरुषार्थ में मेहनत नहीं करनी पड़ती।

190. आप सर्व खजानों को स्वयं में समाकर सम्पन्नता का अनुभव करने वाली आत्मा हो।

191. आप त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो, स्वस्थिति द्वारा हर परिस्थिति को पार करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।

192. आप आत्म-ज्ञान के खजाने को धारण कर हर समय, हर कर्म समझ से करने वाली ज्ञानी तू आत्मा हो।

193. आप सदा प्रेम, सुख, शान्ति और आनंद के सागर में समाये हुए सच्चे तपस्वी हो।

194. आप रहमदिल बन सर्व को दुआयें देने वाली क्षमाशील आत्मा हो।

195. आप स्वयं में गुणों को धारण कर दूसरों को भी गुणदान करने वाली गुणमूर्त आत्मा हो।
196. आप सर्व की श्रेष्ठ कामनायें पूर्ण करने वाली दर्शनीय मूर्त आत्मा हो।
197. आप सत्यता के आधार से सर्व आत्माओं के दिल की दुआओं का मान प्राप्त करने वाली भाग्यवान आत्मा हो।
198. आप चारों ओर के यथार्थ सत्य को परखने वाले सच्चे बच्चे हो।
199. आप संगमयुग के स्वराज्य अधिकारी सो भविष्य के विश्व राज्य अधिकारी आत्मा हो।
200. सदा रुहानी नशे में रह बेगमपुर के बेफिक्र बादशाह का अधिकार प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।
201. आप सदा बापदादा के स्नेह में समाई हुई और श्रीमत पर चलने वाली आज्ञाकारी आत्मा हो।
202. आप सदा विश्व कल्याण का और लाइट का ताज पहनने वाली हुई श्रेष्ठ आत्मा हो।
203. सदा बेहद की दृष्टि और बेहद की वृत्ति रखने वाली आप महान आत्मा हो।
204. आप स्वराज्य का तिलक, विश्व कल्याण का ताज और स्थिति के तख्त पर विराजमान राजयोगी आत्मा हो।
205. आप सदा बेहद की सेवा के उमंग उत्साह में रहने वाली विशेष आत्मा हो।
206. आप सदा बापदादा के याद की पालना में पलने वाली महान आत्मा हो।
207. आप सदा स्वयं प्रति और सर्व आत्माओं के प्रति श्रेष्ठ परिवर्तन शक्ति को कर्म में लाने वाली कर्मयोगी आत्मा हो।
208. आप स्वयं प्रिय, लोक प्रिय और प्रभू प्रिय होने के कारण वरदानी मूर्त हो
209. आप सदा हर्षित रहने वाली आत्मा, प्रकृति वा आत्माओं के गुणों तरफ आकर्षित नहीं हो सकती।
210. आप अपनी चलन द्वारा रूहानी रायॅल्टी की झलक और फलक का अनुभव करने वाली विशेष आत्मा हो।
211. आप तन-मन-धन, मन-वाणी और कर्म से बाप के कर्तव्य में सदा सहयोगी सो योगी आत्मा हैं।
212. आप नथिंग न्यू की स्मृति से सदा अचल बन खुशी में नाचने वाली आत्मा हैं।
213. आप ''निराकार सो साकार`` के महामन्त्र की स्मृति से निरन्तर योगी आत्मा हैं।
214. आप योग की शक्ति द्वारा हर कर्मेन्द्रिय को आर्डर में चलाने वाली स्वराज्य अधिकारी आत्मा हैं।
215. आपके दिल में सदा खुशी का सूर्य उदय रहता है इसलिए आप खुशनुमः आत्मा हैं।
216. आप विश्व में शान्ति की क्रान्ति लाने वाले अवतरित हुए अवतार हैं, आपका किसी में भी ममत्व नहीं।
217. आप अपनी मीठी दृष्टि और शुभ वृत्ति से अनेकों को परिवर्तन करने वाली आत्मा हो।
218. आप शान्ति की शक्ति द्वारा सर्व आत्माओं की पालना करने वाले रुहानी सोशल वर्कर हो।
219. आप शान्ति की लाईट चारों ओर फैलाने वाले लाइट हाउस हो।
220. आप श्रेष्ठ शक्तिशाली स्थिति द्वारा हर परिस्थिति को पार करने वाली आत्मा हो।
221. आप देह, देह की पुरानी दुनिया और सम्बन्धों से सदा ऊपर उड़ने वाले इन्द्रप्रस्थ निवासी हो।
222. आप हर सेकेण्ड, हर श्वाँस, हर खजाने को सफल करने वाली सफलतामूर्त आत्मा हो।
223. आप सदा अपने श्रेष्ठ पोज़ीशन में स्थित रह ऑपोज़ीशीन को समाप्त करने वाली विजयी आत्मा हो।
224. आप व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर नम्बरवन में आने वाली आत्मा हो।
225. आप अपने दिव्यता के प्रभाव से विश्व को दिव्य बनाने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।
226. आप बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तन करने वाली प्रसन्नचित्त आत्मा हो।

227. आप सदा वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! वाह! यह गीत गाने वाली भाग्यवान आत्मा हो।
228. आप मास्टर दाता बन सहयोग, स्नेह और सहानुभूति देने वाली आत्मा हो।
229. आप समझ के स्क्रू ड्राइवर से अलबेलेपन के लूज़ स्क्रू को टाईट कर सदा अलर्ट रहने वाली आत्मा हो।
230. समझना, चाहना और करना इन तीनों की समानता द्वारा आप बाप समान बनने वाली आत्मा हो।
231. आप स्वयं भगवान द्वारा डायरेक्ट पालना, पढ़ाई और श्रेष्ठ जीवन की श्रीमत लेने वाली भाग्यवान आत्मा हो।
232. आप अपने रुहानी वायब्रेशन्स द्वारा शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाली आत्मा हो।
233. आप अपने स्वमान की सीट पर सदा स्थित रहने वाली और सर्व को सम्मान देने वाली माननीय आत्मा हो।
234. आपकी दृष्टि में रहम और शुभ भावना है इसलिए अभिमान वा अपमान का अंश भी आ नहीं सकता।
235. आपके पास साइलेन्स की बहुत बड़ी शक्ति है इसलिए स्वीट होम की यात्रा करना आपके लिए अति सहज है।
236. आप ज्ञान और योग को हर समय अपने जीवन की नेचर बनाने वाली आत्मा हो।
237. आप परमात्मा रुपी शमा पर फिदा होने वाले चैतन्य परवाने हो।
238. आप भाग्यवान आत्मा परमात्म मुहब्बत के झूले में उड़ती कला की मौज में रहने वाली आत्मा हो।
239. आप अपने लक्ष्य और लक्षण की समानता द्वारा बाप समान बनने वाली आत्मा हो।
240. आप रुहानी वायब्रेशन्स द्वारा अपनी स्थिति और स्थान को पॉवरफुल बनाने वाले हो।
241. आप अपने रुहानी वायब्रेशन्स द्वारा फास्ट गति की सेवा करने वाले सच्चे सेवाधारी हो।
242. आप सदा उमंग उत्साह के पंखों से उड़ने वाली पुरुषार्थी आत्मा हो।
243. आप मास्टर ज्ञान सूर्य बन अपने लाईट माईट की किरणें सारे विश्व में फैलाने वाले हो।
244. आप अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा से सर्व समस्याओं को सहज ही पार करने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान हो।
245. आप ब्रह्मा बाप की भुजाओं में समायी हुई सदा सेफ रहने वाली आत्मा हो।
246. आप निश्चय बुद्धि आत्मा, निश्चय के आधार पर सदा अचल अडोल रहने वाली आत्मा हो।
247. आप समर्थ आत्मा सर्व शक्तियों के खजाने के अधिकारी हो।
248. आप प्रत्यक्षता ओर प्रतिज्ञा के बैलेन्स द्वारा बापदादा को प्रत्यक्ष करने वाली आत्मा हो।
249. आप सदा अचल अडोल रहने वाली आत्मा हो क्योंकि आपको निश्चय है जो हो रहा है वो भी अच्छा और जो होने वाला है वो और भी अच्छा।
250. आप यथार्थ सत्य को परख अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने वाली आत्मा हो।
251. आप सेवा के तख्तनशीन सो विश्व राज्य के तख्तनशीन बनने वाली आत्मा हो
252. आपने दृष्टि-वृत्ति में भी पवित्रता को अण्डरलाइन किया है क्योंकि स्मृति में है कि अब घर जाना है।